Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 12 | SPECIAL ISSUE DECEMBER-2024

# संचार माध्यम के द्वारा किशोरावस्था में होने वाली स्वास्थ्य संवर्धन के प्रति जागरूकता का अध्ययन


| | |
|---|---|
| डॉ. प्रीती यादव | विभागाध्यक्ष गृहविज्ञान, जे.एस.वि.वि. शिकोहाबाद, फिरोजाबाद (उ.प्र) |
| शिखा सिंह | शोधार्थी, गृहविज्ञान (विभाग), जे.एस.वि.वि. शिकोहाबाद, फिरोजाबाद (उ.प्र) |



**ABSTRACT:**

संचार एवं आधुनिक मिडिया के माध्यम से किशोरावस्था के किशोरों एवं किशोरियों को स्वास्थ संवर्धन के प्रति जागरूक करना तथा उनके अच्छे स्वास्थ के प्रति उन्मुख करना है टेलीविजन समाचार पत्र मिडिया आदि के द्वारा किशोरों को शिक्षा प्रदान करके उनके सामने आने वाली चुनौतियो का समाधान कारन ही नहीं अपितु राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शारीरिक विकास प्रति स्वस्थ समाज का निर्माण करने का दायित्व प्रदान कारन है किशोर / किशोरी संचार के माध्यम से जागरूकता के प्रति उत्साहित होकर स्वयं जागरूक होने पर वह एक बहुमुखी शिक्षा के प्रति लोगो तक जनसंचार के माध्यम स्वास्थ संवर्धन के प्रति विकासोमुखी का पहल करना सुरु करेंगे तब हमारा देश एक सशक्त एवं सुदृढ़ बनेगा ।



**KEYWORDS:**

**आधुनिक मीडिया, किशोर शिक्षा, शारीरिक विकास, बहुमुखी शिक्षा, जागरूकता.**


## भूमिका:

अब तक आप समझ गये होंगे कि मीडिया मनोविज्ञान की जटिलताएं क्या होती हैं, तथा इसका मनोविज्ञान में, हमारे जीवन में, और इसके अध्ययन करने के तरीको में तथा अनेक वर्षों से इस विषय में जारी अनुसंधान कार्यों में इसका क्या महत्व है। इसके अलावा, मीडिया मनोविज्ञान को अध्ययन के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाने के लिए बहुत प्रयास करने पड़े हैं। एक बात और भी स्पष्ट है कि मीडिया के मानव मनोविज्ञान तथा संज्ञान पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों पर ही प्रायः अधिक ध्यान दिया जाता रहा है। यह आश्चर्य की बात नहीं है हम सब जानते हैं कि अनेक वर्षों से मनोविज्ञान का मनुष्यों के नकारात्मक कार्यों के बारे में पूछताछ करने के लिये ही अधिक प्रयोग किया जाता रहा है। जब तक सकारात्मक मनोविज्ञान का उदय नहीं हुआ तब तक मनोविज्ञान को प्रायः नकारात्मक क्षेत्रों में ही प्रयोग किया गया। 1998 में अमेरिका की मनोवैज्ञानिक सभा के अध्यक्षने सकारात्मक मनोविज्ञान के प्रयोग पर जोर दिया। जब तक वे अध्यक्ष पद पर बने रहे तब तक उन्होंने सकारात्मक मनोविज्ञान का प्रचार किया। मानव शक्तियों तथा मानवीय गुणों को महत्व देने की दिशा में यह जबर्दस्त प्रयास था। मनुष्यों की कमजोरियों तथा दुर्बलताओं को दिखाते रहना ही मानव मनोविज्ञान का उद्देश्य क्यों होना चाहिए? अपने आपसे यह प्रश्न पूछिए कि मीडिया अक्सर नकारात्मक मनोविज्ञान पर ही जोर क्यों देता है, मनोविज्ञान के सकारात्मक पक्ष पर जोर क्यों नहीं दिया जाता? इस बात पर भी विचार करिये कि मनोविज्ञानी अथवा मनोविज्ञान में शोध करने वाले लोग मनुष्य के जीवन पर मीडिया के प्रभाव को ही सबसे अधिक महत्व क्यों देते हैं। क्योंकि मनोवैज्ञानिक यह बात जानते हैं कि मीडिया मनुष्यों के व्यवहार तथा उनके ज्ञानवर्धन की प्रक्रिया पर क्या प्रभाव डालता है। विद्वान यह बात जानते हैं कि जो कुछ लोग मीडिया के माध्यम से सुनते हैं,

स्वास्थ्य संबंधी जानकारियों को लोगों तक पहुंचाने में मीडिया की सबसे बड़ी भूमिका है। स्वास्थ्य संचार का क्षेत्र इस बात पर जोर देता है कि संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से लोगों को विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के बारे में जानकारी किस प्रकार दी जाए। उपयोगी स्वास्थ्य सूचनाओं को लोगों तक पहंचाने तथा लोगों में स्वास्थ्य के प्रति सजगता पैदा करने में मीडिया की बहुत बड़ी भूमिका रहती है, इसी तरह स्वास्थ्य विरोधी आदतों तथा जीवन शैली अपनाने से स्वास्थ्य पर कितना बुरा असर पड़ता है यह जानकारी भी मीडिया के माध्यम से लोगों तक पहुंचाई जा सकती है। स्वास्थ्य मीडिया स्वास्थ्य संबंधी अनेक महत्वपूर्ण जानकारियों को जन-जन तक पहुंचा कर उनका विशेष रूप से सहयोग कर सकता है। बहु आयामी मास मीडिया तथा अन्य प्रौद्योगिक नवीनीकरण के सहयोग से जन-जन तक स्वास्थ्य संबंधी जानकारियों को पहुंचाते हुए लोगों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता उत्पन्न की जा सकती है तथा उन्हें यह बताया जा सकता है कि व्यक्तिगत तथा सामूहिक स्तर पर स्वास्थ्य संबंधी जानकारियों के आदान प्रदान से लोग किस प्रकार अपने स्वास्थ्य को ठीक रखने में समर्थ हो सकते हैं (डब्ल्यू. एच. ओ., 1996)।

स्वास्थ्य संचार केवल चिकित्सक और रोगी के बीच घटित होने वाली प्रक्रिया मात्र नहीं है। इसके माध्यम से स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न जानकारियों को साझा करने से सार्वजनिक रूप से स्वास्थ्य की सुरक्षा की जा सकती है। यदि कभी स्वास्थ्य को लेकर आपातकालीन स्थिति उत्पन्न हो जाये तो लोगों को स्वास्थ्य के महत्व को तथा किसी बीमारी विशेष से बचाव संबंधी जानकारी को मीडिया के माध्यम से इस प्रकार प्रचारित किया जाना चाहिये कि हर किसी की समझ में आ जाये और बीमारी से बचने के लिए सावधानियां बरती जा सकें । इस संदर्भ में कोरोना काल में, कोरोना-19 के संक्रमण से जो महामारी की स्थिति उत्पन्न हुई उससे बचाव के लिए अनेक प्रकार की जानकारियां मीडिया द्वारा प्रसारित की गई। जिनको समझ कर लोगों ने कोरोना के बचाव के उपाय करने सीख लिये और वे काफी हद तक अपने आपको इस बीमारी की चपेट में आने से बचा पाये। कॉलर टयून पर बॉलीवुड के महान अभिनेता अमिताभ बच्चन की बुलंद आवाज गूंजा करती थी, कोरोना वायरस से बचाव के लिए वे कहते थे.''दो गज की दूरी, मास्क है जरूरी''। इस चेतावनी ने जन.जन को सावधान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अधीन काम करने वाले 'पब्लिक हेल्थ फाउंडेशन ऑफ इंडिया' नामक संस्थान ने युवाओं तथा बच्चों के लिए जो 'ई.बुक' तैयार की थी उससे ली गई कुछ आकृतियों का विवरण नीचे दिखाया गया है। यह ई.बुक, पांच विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध है तथा इसका उद्देश्य बच्चों को कोरोना वायरस से बचाव के लिए व्यवहारिक जानकारियां प्रदान करना तथा उनका सशक्तीकरण करना था।

संचार सूचनाओं को साझा करने की प्रक्रिया हैं। यदि सूचनाओं के विवरणों को दूसरों तक पहुँचाने के साधन या माध्यम उपलब्ध न हों तो सूचना साझा नहीं की जा सकतीं। मानव स्वभाव है कि प्राप्त होने वाली जानकारी को मनुष्य दूसरे लोगों तक पहुँचाना चाहता है, उसके लिए उपयुक्त संचार माध्यम की जरूरत पड़ती है। इसी तरह से जब स्वास्थ्य संचार की बात आती है तो स्वास्थ्य संबंधी जानकारियों को अनेक जनों तक पहुँचाने के लिए हमें संचार के साधन चाहिए। थॉमस (2006) के अनुसार कुछ पारंपरिक व कुछ समकालीन पद्धतियां है जिनके द्वारा स्वास्थ्य संबंधी सूचनाएं अन्य लोगों तक पहुँचाई जाती हैं । बड़ी संख्या में लोगों के संपर्क में आने की पद्धतियों में बदलाव आये हैं। इनमें से एक नया तरीका बाजार है जिसने अलग तरह की अनेक संचार व संपर्क पद्धतियां प्रदान की हैं। पारंपरिक पद्धतियों में एक पद्धति छपी हुई सामग्री द्वारा सूचनाओं को जन-जन तक पहुंचाने की है (पर्चे, पोस्टर, स्वयं सहायता निर्देशिका, स्वास्थ्य संबंधी साहित्य आदि), स्वास्थ्य मेले, सूचना एवं विवरण (ईमेल, फोन, आदि द्वारा) सार्वजनिक सेवा उद्घोषणा, रेडियो प्रसारण व रेडियो वार्ताएं, टेलीविजन, समाचार पत्र, प्रेस विज्ञप्तियां, विभिन्न मीडिया माध्यमों पर दिखाई जाने वाली कहानियां व अन्य विधाएं। स्वास्थ्य संचार के समकालीन तरीके संचार क्षेत्र में प्रौद्योगिक नवीनीकरणों के द्वारा अस्तित्व में आये हैं। इनमें सीधे उपभोक्ता बाजार तक पहुँचना इलैक्ट्रोनिक सूचनाओं का वितरण, ई.बाजार तथा सोशल मीडिया बाजार हैं । विविध संचार चैनलों का प्रयोग, जैसे रेडियो, टेलीविजन, समाचारपत्र, विज्ञापन, पर्चे, इंटरनेट तथा सोशल मीडिया उपकरण (जैसे ट्विटर, फेसबुक, तथा यू.टयूब) आदि द्वारा लोगों के संपर्क में आया जा सकता है। स्वास्थ्य संचार के विभिन्न तरीके लोगों का जानकारियों में वृद्धि करते हैं, उनके दृष्टिकोणों तथा सोचने के तरीकों में बदलाव लाते हैं. जिनमें खतरों से बचने के नजरिए, सकारात्मक व्यवहार पर जोर देना, सामाजिक तौर- तरीकों को प्रभावित करना, सहयोगी तथा आवश्यक सेवाओं की उपलब्धता में वृद्धि करना तथा व्यक्तियों का इस तरह सशक्तिकरण करना कि वे अपने आपको स्वस्थ रखने की आदत डाल लें । इसमें अनेक क्षेत्र शामिल हैं, जिनमें शिक्षा द्वारा मनोरंजन या मनोरंजन द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य पत्रकारिता, पारस्परिक संपर्क, मीडिया, एडवोकेसी, संगठनात्मक संचार, खतरों से सावधान करने वाली जानकारियां देना सामाजिक संपर्क तथा सोशल मार्केटिंग आदि शामिल हैं । विविध मीडिया संचार से लेकर पारंपरिक तथा संस्कृति परक संचार, जैसे कहानी सुनाना, कठपुतली का तमाशा तथा नुक्कड़ नाटक, आदि शामिल है। धारावाहिक (सोप-ओपेरा) तथा फिल्म, आदि का प्रायः स्वास्थ्य सूचनाओं के प्रचार प्रसार के लिए किया जाता है। आइए अब स्वास्थ्य संचार संबंधी विभिन्न माध्यमों पर विचार करते हैं। अक्सर अपने अनेक फिल्में देखी होंगी तथा टेलीविजन सीरियल देखें होंगे, और मन में आया होगा कि आप भी इनका हिस्सा होते। कभी-कभी आपको हूबहू आपके जैसा कोई पात्र फिल्म में देखने को मिलता है जिसके कारण आपके आत्म विश्वास में उछाल आ जाता हैं, जैसे हैरी पॉटर देखते समय या नारनिया देखते समय आपके मन में आता है कि काश आपके पास भी जादू का बेंड होता या जादू की छड़ी होती। फिल्में, टेलीविजन सीरियल काल्पनिक पात्र, आदि सब हमारे मन में भावनाओं का संचार कर देते हैं, जो सामान्यतः हम अनुभव नहीं कर पाते। अब तक की इकाइयों में हमने पा करने की बात आती है तो मीडिया सबसे ज्यादा सहयोगी व उपयोगी साबित होता है। उदाहरण के लिए 2007 में जब 'तारे जमीन पर' नामक फिल्म प्रसारित हुई थी तो हमने देखा था कि उसमें विद्यालय जाने वाले बच्चे का किरदार दिखाया गया जो डिस्लेक्सिया नामक मानसिक रोग से पीड़ित था। यह फिल्म बहुत पंसद की गई। इसने बच्चों के साथ व्यवहार करने के मामले में बहुत महत्वपूर्ण सीख दी थी। फिल्म में जिस बच्चे का किरदार दिखाया गया, उसे 'अधिगम अक्षमता' या रोग से पीड़ित होने के बावजूद सामान्य विद्यालय में दाखिल करा दिया गया था। मानसिक रूप से कम विकसित होने के कारण उस बच्चे को वह सब समझ में नहीं आता था जो विद्यालय

के शिक्षक उसे कक्षा में सिखाते थे। माता.पिता बच्चे की मानसिक अक्षमता से परिचित नहीं थे। उन्होंने बच्चे को यह सोच कर बोर्डिंग में डाल दिया कि वहाँ के वातावरण में वह सुधर जायेगा। लेकिन उसकी दशा में तब तक कोई सुधार नहीं हुआ जब तक एक अपरंपरागत शिक्षक विद्यालय में नहीं आ गया। इस शिक्षक ने यह जान लिया कि बच्चे की मानसिक अक्षमता के कारण उसका व्यवहार दूसरे बच्चे से अलग तरह का है। उस बच्चे को आत्मीयता पूर्ण व्यवहार से इतना बदल डाला कि उसने कलात्मक प्रतियोगिता में इतना अच्छा प्रदर्शन किया कि सामान्य मनोदशा वाले व सक्षम छात्र व शिक्षक भी वैसा नहीं कर पाये। फिल्म में दर्शकों के मन पर इतना अच्छा प्रभाव डाला कि फिल्म समीक्षकों ने ही नहीं, दर्शकों ने भी उसकी प्रशंसा की, बुद्धिजीवियों को भी यह फिल्म बहुत पसंद आई (राव तथा कृष्णा, 2008)। शिक्षा मनोरंजन कार्यक्रम मनोरंजन के साथ-साथ स्वास्थ्य संबंधी महत्वपूर्ण जानकारियां भी प्रदान करते हैं । मनोरंजन मीडिया स्वास्थ्य संचार को बा भी करते हैं (अध्वागामी संचार), यह परिवर्तन आने के बाद स्वास्थ्य संचार का क्षेत्र तथा स्वास्थ्य शिक्षा का क्षेत्र दोनों बदलाव की ओर अग्रसर हैं। आजकल अनेक वैबसाइट मौजूद हैं जो लोगों को प्रासंगिक और स्वास्थ्य शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य लोगों को स्वास्थ्य संबंधी जानकारियां देना होता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू एच ओ) के अनुसार "स्वास्थ्य शिक्षा, स्वास्थ्य संबंधी अनुभवों पर आधारित होती है। इसका उद्देश्य स्वास्थ्य सुधार करने में लोगों की सहायता करना होता है - उनकी स्वास्थ्य संबंधी जानकारियों में वृद्धि करके अथवा उनकी सोच को प्रभावित करके" (डब्ल्यू एच ओ, 1998)। डब्ल्यू. एच. ओ. की परिभाषा निम्नलिखित तथ्यों पर जोर देती है. अ) स्वास्थ्य संबंधी जानकारियों का प्रचार.प्रसार करना। ब) लोगों को प्रेरणा देना और उनका मनोबल बइतना सब जाने के बाद भी स्वास्थ्य संचार और स्वास्थ्य शिक्षा में अंतर करना इसलिए कठिन हो रहा है कि दोनों के बीच बहुत समानताएं हैं । दोनों एक जैसी जानकारियां साझा करती हैं और इससे यह पता लगता है कि स्वास्थ्य संचार, स्वास्थ्य शिक्षा का एक हिस्सा है। स्वास्थ्य शिक्षा का उद्देश्य केवल स्वास्थ्य संबंधी व्यवहार अथवा स्वास्थ्य की गुणवत्ता के बारे में जानकारी देना मात्र नहीं है, बल्कि लोगों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए प्रोत्साहित करना तथा उसके लिए उनमें समुचित आत्मविश्वास योग्यता व सामथ्र्य पैदा करना है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 26 करोड़ से ज्यादा ऐसे लोग रहते हैं जो पावों आदि को शामिल किया जाता है (शर्मा, 2005)। यह ब्यूरो सभी राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों तथा केंद्रीय स्वास्थ्य सेवा निदेशालय के तकनीकी विभागों को मीडिया की सेवाएं उपलब्ध करवाता है। आल इंडिया रेडियो पर 117 प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की लिखित प्रति तैयार करना तथा दूरदर्शन केंद्रों पर प्रसारित होने वाले जन स्वास्थ्य सेवाओं पर आधारित कार्यक्रमों का जो प्रारूप तैयार किया जाता है,यह दायित्व ब्यूरो निभाता है। बहुत से लोग ऐसे होते हैं जो कलंक या आक्षेप के साथ बड़े होते हैं क्योंकि वे इसके बारे में ज्यादा कुछ नहीं जानते। परन्तु कुछ लोग इससे बाहर आ जाते हैं वे ऐसी जानकारियों का सहारा लेते हैं जो उन्हें समाज द्वारा लगाए गये कलंक से बाहर आने की हिम्मत देती हैं । कलंक से मुक्ति पाने के लिये व्यक्तिगत अनुभव अथवा ऐसे ही अन्य कारक विशेषरूप से मदद करते हैं। मीडिया के माध्यम से भी अपने ऊपर लगे कलंक अथवा आक्षेप के प्रभाव को कम किया जा सकता है। मीडिया में दूर-दूर तक अपना प्रभाव छोड़ने की क्षमता होती है और वह व्यक्ति य समुदाय को कलंक मुक्त करने का रास्ता निकाल सकता है। आइये, अब इस पर विचार करें कि मीडिया किस प्रकार व्यक्ति या व्यक्ति समूह को कैसे कलंकित अथवा निष्कलंकीकरण साबित कर सकता है। 2015 में एक एक्टीविस्ट ने जारी किया था और तब से यह आज तक अपना महत्व बनाये हुए है। इसके जरिये ऑस्कर जैसे मूल्यवान और महत्वपूर्ण पुरस्कार का बहिष्कार करते हुए कुछ फिल्मी कलाकारों तथा अभिनेताओं ने इस बात का विरोध प्रकट किया था कि हॉलीवुड की फिल्मों में महत्वपूर्ण भूमिकाओं, खासकर नायकों की भूमिकाओं के लिये श्वेत को ही क्यों चुना जाता है? अश्वेत लोगों को क्यों नहीं चुना जाता। इसी तरह कुछ खास भूमिकाओं के लिए पुरुषों को ही क्यों चुना जाता है, महिलाओं को क्यों नहीं चुना जाता है। ऑस्कर पुरस्कारों की चयन प्रक्रिया में अश्वेतों का प्रतिनिधित्व कम होने के कारण प्रायः अश्वेत कलाकारों को ऑस्कर के लिये नामांकित नहीं किया जाता था। सोशल मीडिया में इस मुद्दे पर भारी चर्चा हो गई। लोगों ने ऐसी पक्षपात पूर्ण प्रवृत्ति और परंपरा का विरोध किया अंततः इस पर पुनर्विचार करना पड़ा। फिल्मों में भी इसका जबर्दस्त प्रभाव पड़ा। लोगों ने अपने आपसे प्रश्न पूछना शुरू किया कि फिल्मों में विभिन्न प्रकार की नस्लों वाले कलाकारों का प्रतिनिधित्व क्यों नहीं होना चाहिये? क्या, इस समय फिल्मों में सभी नस्लों के कलाकारों को खुलकर प्रतिनिधित्व करने के अवसर दिये जाते हैं । इस प्रश्न का उत्तर में मिला। क्योंकि हॉलीवुड सिनेमा में श्वेत को तथा पुरुष चरित्रों को अधिक महत्व दिया जाता था जबकि अन्य नस्लों वाले चरित्र भी अक्सर लोकप्रिय और चर्चित श्वेत कलाकारों द्वारा ही निभाये जाते थे। भारत में उत्तर-पूर्वी भारत के चरित्रों के अभिनय के लिए उत्तर-पूर्वी भारत के कलाकार को नहीं लिया गया। जैसे मेरी कॉम के चरित्र पर अभिनय के लिए अदाकारा प्रियंका चैपड़ा को चुना गया, नाकि उत्तर पूर्वी भारत का कलाकार। फिल्मों की जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इन काल्पनिक कहानियों में ऐसे-ऐसे चरित्र होते हैं जो बहुत लोगों के लिए, ' रोल मॉडल' बन जाते हैं। इसलिए सिनेमा में विविधता को शामिल न करने से समाज पर सीधा प्रभाव पड़ता है। प्रतिनिधित्व का सवाल केवल अश्वेत कलाकारों तक ही सीमित नहीं रहा। इसमें स्त्रियों की भूमिकाओं तथा एल जी बी टी क्यू समुदाय से जुड़े लोगों तथा विभिन्न नस्लों से जुड़े लोगों के प्रतिनिधित्व के सवाल भी उठाये गये।

सकारात्मक मनोविज्ञान के अस्तित्व में आने के बाद मीडिया के अनेक ऐसे उपयोग सामने आने लगे, जिन्हें लोगों के सहयोग के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। तभी से मीडिया को और अधिक महत्व दिया जाने लगा। मीडिया ने समाज सहयोगी तथा अन्य अनेक प्रकार के जो रचनात्मक सहयोग दिये हैं उन्हें स्वीकार किया जाने लगा। यहां तक आते-आते मीडिया के सकारात्मक इस्तेमाल की पृष्ठभूमि तैयार हो चुकी है। अब यह देखना होगा कि हम मीडिया का सकारात्मक इस्तेमाल कैसे कर सकते हैं । स्वास्थ्य संबंधी जानकारियां प्राप्त करने में, स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने में, कलंकीकरण और निष्कलंकीकरण में मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। केस स्टडी के माध्यम से हमने जाना कि मीडिया ने एचआईवी/एड्स के बारे में लोगों को जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इतना ही नहीं इस रोग से पीड़ित लोगों के बहिष्कार किये जाने का मीडिया ने विरोध किया और यह समझाने का प्रयास कि जो लोग इस रोग से पीड़ित है। उनसे दूरी बनाये रखने की बजाय अपने बचाव का ध्यान रखते हुए उनकी सहायता की जानी चाहिये। दूसरे केस स्टडी में यह समझाने का प्रयास किया गया है कि पोलियो संबंधी जानकारियों के प्रचार-प्रसार में तथा पोलियो से बचाव के बारे में मीडिया ने किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका अदा की और पोलियो उन्मूलन अभियान को सफल बनाया। मीडिया का इस्तेमाल यदि उपयुक्त रणनीति के माध्यम से किया जाये तो मीडिया समाज के लिये बहुत उपयोगी साबित हो सकता है और समाज के बहुआयामी रचनात्मक विकास में बड़ी भूमिका निभा सकता है। किसी व्यक्ति अथवा संस्था पर लगे कलंक को मिटाना तथा उन्हें सामान्य अवस्था में प्रस्तुत करना निष्कलंकीकरण कहलाता है जिसके लिये अनेक प्रकार के उपाय करने पड़ते हैं। जैसे सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियान, स्वास्थ्य शिक्षा, चिकित्सक और रोगी के बीच वार्ता आदि। इसका उद्देश्य स्वास्थ्य संबंधी शिक्षा प्रदान करके बीमारियों की रोकथाम करना होता है। स्वास्थ्य शिक्षा के द्वारा अकाल मृत्यु, असामान्य व्यवहार तथा कार्यों में परिवर्तन लाया जा सकता है। अपने स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के निराकरण द्वारा स्वस्थ रहने की आदत डालना। जब बहुत तरह की खबरें किसी मामले में फैल जाती हैं तो यह तय करना मुश्किल हो जाता है कि इसमें कौनसी खबर सही है कौनसी गलत। अफवाहें अथवा अधकचरी सूचनायें सोशल मीडिया द्वारा फैलाई जाती हैं । यह मनोविज्ञान का उप क्षेत्र है जो मीडिया के सकारात्मक, संज्ञानात्मक, भावनात्मक तथा व्यवहार संबंधी प्रभावों की मीडिया के माध्यम से जानकारी देता है। किसी पर लगा एक ऐसा आक्षेप जो उसे बदनाम कर देता है तथा उसके व्यक्तित्व की संपूर्णता को कम कर देता है।

## REFERENCES


1. डॉ. शिवांतिका शरद, अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान विभाग, विवेकानंद कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली। https://www.unicef.org/ india/our-partners/ celebrities/ amitabh-bachchan)

2. https://commons.wikimedia.org/wiki/File:WHO_EN_HealthyAtHome Physical-activity_ if_you_are_at_home_during_COVID-19outbreak.png 106 LokLF; lapkj. Auld, M. E., Radius, S. M., Galer-Unti, R., Hinman, J. M., Gotsch, A. R., & Mail, P. D. (2011).Distinguishing between health education and health information dissemination.American journal of public health, 101(3), 390 392

3. https://doi.org/10.2105/AJPH.2010.300037 CRICO Strategies National CBS Report.(2015). Malpractice Risks in communication failures. Retrieved from . . .https://www.rmf.harvard.edu/Malpractice-Data/Annual-BenchmarkReports/Risks-in-Communication-Failures Dunham, (29th January 2008). Black death 'discriminated' between victims. Retrieved from

4. http://www.abc.net.au/science/articles/2008/01/29/2149185.htm Falk, G. (2001). STIGMA: How We Treat Outsiders.Prometheus Books. Thomas, R. K. (2006) Introduction to Health Communication. In: Health Communication. Springer, Boston, MA

5. https://doi.org/10.1007/0-387 26116-8_1 World Health Organisation.(2021) Infodemic Management – Infodemiology. Ad-Hoc Technical Consultation on Managing the COVID-19 Infodemic. Available online at:

6. https://www.who.int/teams/riskcommunication/infodemic-management (accessed July 7–8, 2021). US Office of Disease Prevention and Promotion.(2004). Health communication, Healthy People 2010 (Vol. 1). Retrieved from

7. http://healthy people.gov/Document/HTML/volume1/11HealthCom.htm# edn4. Rao, T. S. Sathyanarayana; Krishna, V. S. T. (2008). "Wake up call from 'Stars on the Ground'". Indian Journal of Psychiatry. 50 (1): 2–4. doi:10.4103/0019-5545.39749. Schevitz J. (2010). Advertising as a force in public health education. 1915. American journal of public health, 100(7),

8. https://doi.org/10.2105/ajph.100.7.1202 1202–1204. Sharma, M. (2005). Health Education in India: A Strengths, Weaknesses, Opportunities, and Threats (SWOT). The International Electronic Journal of Health Education, 8, 80-85 130 Salters-Pedneault, K. (2020).Understanding Stigma When You Have BPD.